जैनेन्द्र और शरतचन्द्र के उपन्यासों में संवेदनात्मक धरातल : एक तुलनात्मक विश्लेषण

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

अध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा

शोध निर्देशक

डॉ० आनन्द प्रकाश गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

अनुसंधायिका

स्वप्ना किरण 10.04.2024

स्वपना किरण

एम०ए० हिन्दी (IGNOU)

पैट क्रमांक- 22090524

Mob. No – 8618562381

email: Swapnakiran2828@gmail.com

जैनेन्द्र और शरतचन्द्र के उपन्यासों में संवेदनात्मक धरातल : एक तुलनात्मक विश्लेषण

• भूमिका :

भारतीय भाषाओं के साहित्य में बांग्ला और हिन्दी साहित्य का विशिष्ट महत्व हैं। भारतीय भाषाओं के साहित्य में आधुनिक हिन्दी गद्य का विकास बांग्ला साहित्य से आरम्भ होता है। 1800ई० में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना से ही भारतीय भाषाओं में गद्य विधा की शुरुआत होती है। ब्रिटिश सरकार ने अपनी राजनीतिक स्थिति और सत्ता को सुदृढ़ करने के लिए फोर्ट विलियम जैसे कॉलेज की स्थापना की। इस कॉलेज के विद्वानों ने गद्य के विकास में अपना महत्वप्रद योगदान दिया है। उपन्यास लेखन के क्षेत्र में पश्चिमी सभ्यता का अवदान सर्वाधिक हैं। वास्तव में पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में सबसे पहले आये बंगाल ने अपनी रूढ़ समाज व्यवस्था की परख शुरु की। तभी से व्यंग्य रूप में उपन्यास का अभ्युदय हुआ। सर्वप्रथम 1852ई० में अंग्रेजी लेखिका 'मेरी हैचिसन' की पुस्तक 'करुण ओ कुलमणि' को बांग्ला का प्रथम उपन्यास मानते है। लेकिन कुछ विद्वान टेकचंद्र ठाकुर रचित 'आलाले घेरेर दुलाल' (ऊँचे परिवार का बिगरा बेटा) को बांग्ला का प्रथम मौलिक उपन्यास मानते हैं। यह उपन्यास सन् '1855-1857 में एक मासिक पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। यह पुस्तक सन् 1858 में प्रकाशित हुआ।

कुछेक समीक्षक बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित 'दुर्गेशनंदिनी' (1965) को बांग्ला का प्रथम मौलिक उपन्यास मानते हैं। वस्तुतः 'दुर्गेश नंदिनी' के प्रकाशन से ही बांग्ला के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इस उपन्यास का भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। हिन्दी साहित्य में भी 1873 ई० में दुर्गेशनंदिनी का अनुवाद हो चुका था। हिन्दी में श्रीनिवास दत्त द्वारा रचित परीक्षा-गुरु को

पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है जिसका प्रकाशन 1882ई० में हुआ। लेखक ने भूमिका में लिखा है कि "इसके लेखन में महाभारत आदि संस्कृत, गुलिस्तां वगैरह आदि फारसी एस्पेकटेटर लोर्ड बेकन, गोल्ड स्मिथ, विलियम कूपर आदि के पुराने लेखों और स्त्री–बोध आदि के वर्तमान रिसालों से बड़ी सहायता मिली है।

बांग्ला भाषा के साहित्य में उपन्यास लेखन का कार्य जहाँ बंकिमचन्द्र चटर्जी से शुरू होकर रवीन्द्रनाथ टैगोर के लेखन कला से संतृप्त होते हुए शरतचन्द्र तक पहुंच कर सर्वाधिक ऊंचाई को प्राप्त किया है वहीं हिन्दी साहित्य में उपन्यास लेखन का कार्य 'परीक्षागुरु' से शुरू होकर प्रेमचन्द काल तक अपने उत्कर्ष को प्राप्त किया। हिन्दी साहित्य में उपन्यास के क्षेत्र में जैनेन्द्र के प्रवेश करते ही उसमें संस्थनात्मक परिवर्तन आए। प्रेमचन्द के उपन्यास जहाँ सामाजिक जीवन बोध को उद्घाटित करने में सफल रहा, वहीं नारी जीवन की मन की गुत्थियों को सुलझाने में जैनेन्द्र सर्वाधिक सशक्त उपन्यासकार के रूप में हिन्दी साहित्य की चेतना क्षितिज पर स्थापित हुए।

हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में नारी मन की अन्तर्गाथा उसकी वेदना और उसके अन्तर्मन में जन्म लेते विविध भावों का मनोवैज्ञानिक चित्रण जैनेन्द्र ने प्रस्तुत किया है। ठीक वहीं काम बांग्ला भाषा के उपन्यासकार शरतचन्द्र कर रहे थे। शरतचन्द्र में अनमेल विवाह, विवाहेतर प्रेम, ससुराल में यंत्रणा, दाम्पत्य जीवन में दरार आदि नारी जीवन के समस्याओं पर अपनी लेखन कला को केंद्रित किया है। उनकी उपन्यासों में नारी जीवन की मूक वेदना का करुणामय चित्र उपस्थित हैं। इनके उपन्यासों में 'बड़ी दीदी' (1913 ई०), 'चरित्रहीन' (1917 ई०) 'ब्राहमण कन्या' (1920 ई०) प्रमुख हैं; जिसमें उपन्यासों के सृजित घटनाएँ यथार्थ लगते हुए भी भावना से अनुप्राणित हैं। इनके उपन्यासों की नारी पात्र पुरुष प्रभुता अथवा अत्याचार के शिकार नहीं बल्कि प्रणय के यातनाओं के शिकार है। इन नारियों को चित्रित करते सतय शरत के सामने यशोदा और कृष्ण की शाश्वत प्रेम भावनाओं का आदर्श रहा हैं। हिन्दी में जैनेन्द्र के सुनीता (1935 ई०) त्यागपत्र (1936 ई०), कल्याणी (1940

ई०) से सुखदा (1956 ई०) मुक्तबोध दशार्क (1985 ई०) तक नारी की गहरी मानसिक वेदना का चित्रण है. पर उसका मूल विषय नर नारी के बीच का निर्वाद अशरीरी प्रेम है।

जैनेन्द्र और शरतचन्द्र दोनों उपन्यासकार ने नारी जीवन की कथा व्यथा को नई चेतना और नए भावबोध के साथ उद्घाटित किया है। वीसवीं शताब्दी में नारियों की नई चेतना में बदलाव होने के कारण स्त्री–पुरुष के संबंध बदले है. प्रेम की परिभाषा बदली है. संस्कार बदले हैं, जीवनगत संवेदना में बदलाव आया है। ऐसी स्थिति में दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों के संवेदनात्मक धरातल का शोधकीय विजन के साथ विश्लेषण से बांग्ला और हिन्दी साहित्य के औपन्यासिक संरचना में शोध के नए मार्ग का उद्घाटन संभव है।

● प्रस्तावित शोध विषय का आवश्यकता :

उपन्यासकार जैनेन्द्र हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में शरतचन्द्र के नाम से विख्यात हैं। जैनेन्द्र के उपन्यास साहित्य के अन्तरंग में प्रतिस्थापित हैं। यह अलग बात है कि वे पकड़ में नहीं आते। बंगाल के उन्नायक उपन्यासकार एवं रवीन्द्र बाबू का भी प्रभाव जैनेन्द्र के उपन्यासों पर प्रत्यक्ष दिखायी पड़ता है। 'सुनीता' पर 'घर बाहिरे' के प्रभाव को स्वयं जैनेन्द्र जी ने स्वीकार किया है और 'परख' उपन्यास पर चौखेरवाली के प्रभाव की झलक है। तथा चतुरंग की वस्तु और शैली का व्यापक प्रभाव दो रचनाओं 'सुखदा' और 'विकर्त' पर है। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जैनेन्द्र पर शरत का प्रभाव सूक्ष्म है। वस्तुत: जैनेन्द्र की साहित्यिक चेतना पर सर्वाधिक अवदान शरतचन्द्र का ही दिखायी पड़ती है। जैनेन्द्र ने 'ये और वे' निबन्ध संग्रह में शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय शीर्षक उपर्युक्त सारी मान्यताओं को परिपुष्ट किया है।

बंगला साहित्य के क्षेत्र में शरतचन्द्र का प्रवेश आकस्मिक तरीके से हुआ। अपने जीवन के बहुत लम्बे समय तक निर्विकार रूप से जीवन व्यतीत करते रहे। लेकिन जब जीवन के गहरे मर्मस्पर्शी

अनुभवों को लेकर शरत का प्रवेश बंगला साहित्य के क्षितिज पर हुआ उनकी सृजनात्मकता के द्वारा जन सामान्य की चेतना साहित्य की लहरों से तरंगायित होने लग गयी। इस सम्बन्ध में बंगला समीक्षक श्री मोहित कुमार मजुमदार की मान्यता है कि "रवीन्द्रनाथ जिस समय अपनी छटा से साहित्य गगन को दूर–दूर तक आलोक प्लावित कर चुके थे, उसी समय एक कोनो में जोरों से बिजली चमकी। एक नवीन रोशनी से आकाश में हलचल पैदा हो गयी, यही शतरचन्द्र थे।"

20वीं शताब्दी का कालखंड भारत के लिए स्वाधीनता संघर्ष और सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति का काल था। यही कारण है कि 20वीं शताब्दी के आरंभिक दशक से ही विश्व के समस्त भागों में राजनीति, विज्ञान एवं साहित्यिक क्षेत्र आदि में जो व्यापक क्रांतियाँ मचने लगी थी, उसकी चेतना से औपनिवेशिक भारत में मुक्ति की छटपटाहट और अधिक तीव्र हो रही थी। यही कारण है कि बंकिमचन्द्र के पुराने आदर्श और रवीन्द्रनाथ का रहस्यवादी साहित्य जन–सामान्य की चेतना में स्पन्दन का राग भरने में पूर्णरूप से समर्थ नहीं था। इस सब कारणों के कारण शरत का उपन्यास साहित्य बंगला की जनता में सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। इनके उपन्यासों में संवेदना का उद्दाम वेग था, जनता की ज्वलंत समस्याओं के निराकरण का मार्ग था और सबसे बड़ी बात यह है कि नारी–जीवन के आदर्श और अस्मिता की रचना के प्रश्न अर्न्तनिहित थे।

शरतचन्द्र का बंगला साहित्य में प्रवेश 'बड़ी दीदी' (1907 ई०) के प्रकाशन से हुआ। वैसे उनकी पहली कहानी 'मंदिर' (1902 ई०) में प्रकाशित हो चुका था। बड़ी दीदी के प्रकाशन से ही बंगला साहित्य में तीव्र हलचल पैदा हुई। भाषा और शिल्प की संरचना से अनुस्यूत यह उपन्यास वास्तव में नयी जीवन धारा में नये राग का स्पन्दन और संस्पर्श कराने में पूर्ण रूप से सक्षम था।

बड़ी दीदी वस्तुतः बंगला उपन्यास के लिए एक नव्य प्रयोग था। इस रचना पर स्वयं रवीन्द्र बाबू ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए लिखा है कि– सचमुच रचना बड़ी चमत्कार है। लेकिन शरतचन्द्र की ख्याति 'चरित्रहीन' (अक्टूबर 1913 ई०) से मिली। यमुना पत्रिका जब चरित्रहीन का पहला

अंश प्रकाशित हुआ तो इतना तूफान उठा जितना कम रचनाओं को लेकर उठता रहा है। इस रचना के संदर्भ में पूणीन्द्रनाथ पाल ने शरतचन्द्र को तार किया था कि– "चरित्रहीन क्रिएटिंग एलार्मिंग सेन्सेशन।" इनके अन्य उपन्यासों में चन्द्रनाथ (1913 ई०), विराज बहू (1913 ई०), पंडित महाशय (1913 ई०), पल्ली समाज (1915 ई०) देवदास (1916 ई०), गृहदाह (1916 ई०), गृहदाह (1916 ई०), दत्ता (1917 ई०), ब्राह्मण की बेटी (1920 ई०), देना–पावला (1920 ई०), पथ के दावेदार (1920 ई०), नवविद्यान (1923 ई०), शेष प्रश्न (1927 ई०), विप्रदास (1932 ई०), शुभद्रा (1948 ई०)।

शरतचन्द्र के सभी उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को बड़े ही सूक्ष्म तरीके से उठाया गया है। साथ ही नारी के प्रेम पर भावुकतापूर्ण विचार किया गया है। इनका नारी प्रेम मर्यादा और संयम का प्रतीक हैं। उनकी मान्यता है कि इन शब्दों को समाज ने अतिरंजित कर डाला है। 'शेष प्रश्न' की कमल के द्वारा नारी प्रेम के बंधनों में बँधकर संकुचित न करने का आग्रह किया गया है। वे 'शेष प्रश्न' में इसी मान्यता के समर्थक हैं– "एक दिन जिससे प्रेम किया है फिर किसी दिन किसी कारण उनमें किसी परिवर्तन का अवकाश नहीं हो सकता, मन का यह अचल अडिग जड़ धर्म न तो स्वस्थ है और न सुन्दर है।"

हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में जैनेन्द्र का पदार्पण 'परख' (1929 ई०) से हुआ। लेकिन उनकी लोकप्रियता सुनीता (1936 ई०) से मिली। 'परख' पर जब हिन्दुस्तानी अकादमी का पुरस्कार मिला तब वे साहित्यिक जगत से अनजान थे। जैनेन्द्र स्वयं कहते हैं कि– "फाँसी के बाद उपन्यास के नाम पर पहली किताब छपी– 'परख'। उस पर हिन्दुस्तानी अकादमी का पुरस्कार मिला और मुझे बरबस साहित्य में जगह मिली। सच यह है कि मैं बेहद अनजान था और साहित्य में तो एकदम अनाड़ी ही था। अकादमी वालो को यह तक मालूम न हुआ कि यह आदमी कहाँ रहता है जहाँ इनाम भेजा जाये।"

सुनीता (1936 ई०) तथा 'गोदान' (1936 ई०) दोनों समकालीन रचनाएँ है। जैनेन्द्र में 'सुनीता' के माध्यम से हिन्दी में एक नयी प्रवृत्ति का उद्घाटन किया। उन्होंने बाह्य-जगत् को अधिक महत्त्व न देकर मनुष्य के अन्तर्जगत का विश्लेषण अपने उपन्यास का माध्यम बनाया। इस सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध समीक्षक डॉ० नलिन विलोचन शर्मा ने लिखा है कि– "सन् 1936 में प्रेमचन्द का गोदान प्रकाशित हुआ था; 1936 में ही जैनेन्द्र की सुनीता प्रकाशित हुई थी। जैनेन्द्र ने सर्वप्रथम प्रेमचन्द की और अगर प्रेमचन्द की नहीं तो समस्त हिन्दी उपन्यास की उपलब्धि का प्रत्याख्यान करने का मौलिकतापूर्ण साहस दिखाया और 'गोदान' के रचयिता प्रेमचन्द से उन्हें सबसे अधिक प्रश्रय और प्रोत्साहन मिला। जैनेन्द्र ने गाँव खेत, खुली हवा और सामाजिक जीवन के विस्तारों को छोड़कर शहर की गली और कोठरी की सभ्यता को व्यक्ति के आभ्यन्तर जीवन की गुत्थियों और गहराइयों को और भी पहले से अपने उपन्यासों को विषय बनाना शुरू कर दिया था। 'सुनीता' में उपन्यासकार ने सबसे गहरी डूबकी लगायी थी। सच्चे अर्थ में हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में जैनेन्द्र ने एक पहेली के रूप में पदार्पण किया था। पाठक को किसी-पिटी एक संकीर्ण नैतिकाता से निकालकर मूल नैतिकता तक पहुँचानेवाले गहन आत्मचिन्तन की ओर सर्वप्रथम उन्होंने ही प्रवृत्त किया। प्रेमचन्द के उपन्यासों में 'सु' और 'कु' तथा देव और दानव के रूप में जो मूल्य स्थिर कर लिये थे, जैनेन्द्र ने आते ही उसके आगे प्रश्न चिह्न लगा दिया और पाठकों से अनुरोध किया कि वह इन सामाजिक मूल्यों के बाहरी रंग-रूप में न उलझकर उनकी आत्मका तक पहुँचने को प्रयास करें।

इनके उपन्यासों में 'परख' (1929 ई०), तपोभूमि (1932 ई०), सुनीता (1936 ई०), त्यागपत्र (1937 ई०), कल्याणी (1939 ई०), सुखदा (1952 ई०) विवर्त (1953 ई०), व्यतीत (1953 ई०), भयवर्धन (1916 ई०), मुक्तिबोध (1965 ई०), अनन्तर (1968 ई०) अनामस्वामी (1970 ई०) प्रमुख है।

इस तरह स्पष्ट है कि शरतचन्द्र और जैनेन्द्र दो भाषाओं के उपन्यासकार भले ही है लेकिन दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में जीवन के अन्तस्तल में छिपे भावों और विचारों को सूक्ष्म निरीक्षण करने की अद्भुत क्षमता थी। दोनों लेखक मानव मन को पढ़ने मैं महारत हासिल था। नारी मन की अन्तर्व्यथा को पढ़ने में दोनों उपन्यासकार एक धरातल पर दिखायी देते हैं। संवेदना के धरातल पर इनके दोनों की रचनाएँ अत्यन्त ही उत्कृष्ट और प्रभावी है। वर्तमान समय में दोनों लेखकों के उपन्यासों के संवेदनात्मक धरातल से निश्चय ही साहित्य के क्षितिज पर मानवीय संवेदना का विस्तार होगा और एक सम्यक् मूल्यों की स्थापना संभव है। ऐसी स्थिति में प्रस्तावित शोध प्रारूप की आवश्यकता स्वयं सिद्ध है।

• प्रस्तावित शोध विषय का महत्त्व :

उपन्यास के संदर्भ में W.H. Hudson की मान्यता है कि– "A novel is really great only where it lays, its foundations broad and deep in the thing which constantly and seriously appeal to us in the struggle and fortunes of our common humanity".

शतरचन्द्र और जैनेन्द्र के उपन्यास 'हडसन' की उपर्युक्त कसौटी पर खरे उतरते दिखायी देते हैं। इन दोनों लेखकों के उपन्यासों के कथानक जीवन के अनुभवों पर आधारित है और नैसर्गिक भाव–बोध से आप्लावित है। उनके द्वारा चित्रित व्यक्ति समाज, नारी की पारिवारिक स्थिति और उसके मन का द्वन्द्व, नारी और समाज का संघर्ष, नारी की प्रेम भावना आदि के चित्रण बिल्कुल यथार्थ हैं। उन्होंने अपने पूर्व–कालीन अधिकांश उपन्यासकारों की भाँति काल्पनिक कथानकों की उपन्यास का विषय नहीं बनाया बल्कि यथार्थ की भूमि से उसका चुनाव किया। विषय के समग्र

चित्रण की ओर भी दोनों लेखकों ने ध्यान दिया। उन्होंने जीवन के जिस क्षेत्र को अपने कथानक का विषय चुना, उसका पूर्ण परिचय भी पाठकों के समक्ष उपस्थित किया।

शरतचन्द्र और जैनेन्द्र दोनों उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों का कथ्य आधुनिक समाज से ग्रहण किया है। शरतचन्द्र ने विशेषरूप से पारिवारिक जीवन के बहाने सामाजिक मूल्यों को संस्पर्श किया है। यही कराण है कि शरतचन्द्र के उपन्यासों की कथावस्तु की परिधि सीमित और संकुचित हुई है। जैनेन्द्र भी अपने उपन्यासों में कथावस्तु की गौणता स्वयं स्वीकार करते हैं– कहानी सुनना मेरा उद्देश्य ही नहीं था। अत: तीन–चार व्यक्तियों से ही मरो काम चल गया है। इस विश्व के छोटे खण्ड को लेकर हम अपना चित्र बना सकते है। अत: इनके उपन्यासों की कथावस्तु को गौण स्थान अनायास ही प्राप्त हो जाता है। जैनेन्द्र वस्तुत: पाठको को कथावस्तु में ही उलझाकर नहीं रखना चाहते, कहानी के माध्यम से मानव मन की पेचीदगियों और गहराइयों में उसे उतारना चाहते हैं तथा मानव की मूल प्रवृत्तियों का परिष्कार करना चाहते हैं। इस कारण कहानी कहने का तो उनका बहाना मात्र है।

इस तरह स्पष्ट है कि दोनों उपन्यासकार अपनी–अपनी भाषा और साहित्य की क्षितिज पर सर्वोच्च स्तर को संस्पर्श करते है। दोनों उपन्यासकारों ने मानव मन को सूक्ष्म और कलात्मक तरीके से पढ़ने और उसे सृजनात्मक तरीके से साहित्य जगत् में उतारने की कोशिश की है। ऐसी स्थिति में दोनों उपन्यासकारों को उपन्यासों के संवेदनात्मक धरातल का अनुसंधानक विश्लेषण किया गया है तो निश्चय ही वर्तमान सदी में मानव–मन को समझने और जानने में अत्यंत कारगर सिद्ध होगा। नैतिक मूल्यों और उन्मुक्त तथा निर्सग प्रेम को समझने में भी पाठक और शोधार्थी सक्षम होंगे।

• पूर्वकृत शोध :

मेरी दृष्टि में जैनेन्द्र और शरतचन्द्र के उपन्यासों में संवेदनात्मक धरातल पर अबतक शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। लेकिन इस क्षेत्र में कुछे शोध कार्य सम्पन्न हुए उनमें रामरतन भटनागर

रचित- 'जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा', डॉ० शांति भारद्वाज रचित- 'हिन्दी उपन्यास प्रेम और जीवन', रघुनाथ शरण झालानी रचित- 'जैनेन्द्र और उनके उपन्यास', डॉ० देवराज उपध्याय रचित- 'जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन', डॉ० सुबोध चन्द्र सेनगुप्त रचित- 'शरत प्रतिभा', डॉ० विष्णु प्रभाकर रचित– 'आवारा मसीहा', डॉ० रामदरश मिश्र रचित- 'जयवर्धन की पहचान', रामस्वरूप चतुर्वेदी रचित- 'शरत के नारी पात्र' प्रमुख हैं।

- **शोध के आधार ग्रन्थ :**

प्रस्तावित शोध विषय के लिए निम्न आधार ग्रन्थ सहायक सिद्ध होंगे–

1. बड़ दीदी (1907 ई०)
2. चन्द्रनाथ (1913 ई०)
3. चरित्रहीन (1913 ई०)
4. विराजबहु (1913 ई०)
5. पंडित महाशय (1914 ई०)
6. पल्ली समाज (1915 ई०)
7. श्रीकांत (1915 ई०)
8. देवदास (1916 ई०)
9. गृहदाह (1916 ई०)
10. दत्ता (1917 ई०)
11. ब्राह्मण की बेटी (1920 ई०)
12. देना पावना (1920 ई०)

13. पथ के दावेदार (1922 ई०)

14. नव विधान (1923 ई०)

15. शेष प्रश्न (1927 ई०)

16. विप्रकाश (1932 ई०)

17. सुभदा (1935 ई०)

18. परख (1929 ई०)

19. तपोभूमि (1932 ई०)

20. सुनीता (1936 ई०)

21. त्यागपत्र (1937 ई०)

22. कल्याणी (1939 ई०)

23. सुखदा (1952 ई०)

24. विवर्त (1953 ई०)

25. व्यतीत (1953 ई०)

26. जयवर्धन (1956 ई०)

27. मुक्तिबोध (1965 ई०)

28. अनन्तर (1968 ई०)

29. अनापस्वामी (1970 ई०)

- **प्रस्तावित शोध विषय की परिकल्पना :**

प्रस्तावित शोध विषय के सम्बन्ध में मेरी परिकल्पना यह है कि शरत और जैनेन्द्र दोनो संवेदनाशील कलाकार है। दोनों ने मानव मन की सूक्ष्म भाव–लहरियों को अपनी सृजन के कैनवास

पर उतारने की कोशिश की है। खासकर नारी जीवन की परिधि में झाँककर दोनों उपन्यासकारों ने मनोवैज्ञानिकता के धरातल पर सूक्ष्म मनोभावो का यथार्थ चित्र उपस्थापित किया है। दोनो उपन्यासकारों के उपन्यासों में संवेदना का गहनतम रूप तरंगायित होता हुआ दिखायी देता है, जिसमें नैतिक अन्वेषित मूल्य हैं, स्त्री मुक्ति का उच्छवास है, व्यक्ति कुंठा और नैराश्य की अभिव्यक्ति है, परम्परागत सामाजिक मूल्यों पर चोट है और उन्मुक्त प्रेम का अजस्र प्रवाह सर्वत्र परिलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों के संवेदनात्मक धरातल से निस्संदेह साहित्य क्षितिज पर नये सिद्धांतो और मूल्यों की स्थापना संभव हो सकेगा।

- **प्रस्तावित शोध विषय की प्रविधि :**

प्रस्तातिव शोध विषय की प्रविधि पूर्णत: विवरणात्मक होगी। आगमन विधि का उपयोग तथ्यों के संकलन के लिए और निगमन विधि का उपयोग शोध से सम्बंधित तथ्यों के विश्लेषण और संभावित निष्कर्ष की प्राप्ति के लिए किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त तुलनात्मक पद्धति का उपयोग भी अपेक्षित है। तुलनात्मक पद्धति के द्वारा बंगला और हिन्दी भाषा में रचित उपन्यासों के तार्किक विश्लेषण संभव है।

- ## प्रस्तावित शोध अध्यायों का विभाजन :

प्रस्तावित शोध प्रारूप निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित होगा–

प्रथम अध्याय	:	हिन्दी और बंगला उपन्यासों की विकास–प्रक्रिया
द्वितीय अध्याय	:	शतर और जैनेन्द्र का जीवन–वृत और उनके उपन्यास
तृतीय अध्याय	:	शतर और जैनेन्द्र के उपन्यासों में संवेदनात्मक भाव–बोध
चतुर्थ अध्याय	:	शरत और जैनेन्द्र के उपन्यासों के पात्रों में संवेदनात्मक स्तर
पंचम अध्याय	:	शरत और जैनेन्द्र के उपन्यासों में भाषा और शिल्प के स्तर पर संवेदना का विकास
षष्ठ अध्याय	:	शरत और जैनेन्द्र के उपन्यासों के नारी पात्रों में प्रेम के विविध रूप और संवेदना के आयाम
सप्तम अध्याय	:	• उपसंहार • शोध के निष्कर्ष और मौलिक मान्यताएँ • वर्त्तमान संदर्भ में शोध–प्रबन्ध का महत्त्व
परिशिष्ट	:	संदर्भ ग्रन्थों की सूची

- प्रस्तावित ग्रन्थों की सूची :

- **शरतचन्द्र :**

रचनाऐं	प्रकाशन वर्ष
बड़ी दीदी	(1917 ई०)
चन्द्रनाथ	(1913 ई०)
चरित्रहीन	(1913 ई०)
विराज बहु	(1913 ई०)
पंडित महाराय	(1914 ई०)
श्रीकांत	(1915 ई०)
देवदास	(1916 ई०)
गृहदाह	(1916 ई०)
दत्ता	(1917 ई०)
ब्राहमण की बेटी	(1920 ई०)
देना पावक	(1920 ई०)
पथ के दावेदार	(1922 ई०)
नव विधान	(1923 ई०)
शेष प्रश्न	(1927 ई०)
विप्रदास	(1932 ई०)
शुभदा	(1935 ई०)

- **जैनेन्द्र :**

रचनाऐं	प्रकाशन वर्ष
परख	(1929 ई०)
तपोभूमि	(1932 ई०)

सुनीता	(1936 ई०)
त्यागपत्र	(1937 ई०)
कल्याणी	(1936 ई०)
सुखदा	(1952 ई०)
विवर्त	(1953 ई०)
व्यतीत	(193 ई०)
जयवर्धन	(1956 ई०)
मुक्तिबोध	(1965 ई०)
अनन्तर	(1968 ई०)
अनपढ़ दासी	(1970 ई०)

अन्य संदर्भ ग्रन्थ :

- डॉ० देवराज उपाध्याय, कथा साहित्य मेरी मान्यताएँ, सौभाग्य प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1990
- भगवती चरण वर्मा, साहित्य की मान्यता, भगवती हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1988
- राजेन्द्र यादव, प्रेमचंद्र की विरासत, अक्षय प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2003
- डॉ० बालकृष्ण पाण्डेय, प्रेमचंद्र विचारधारा और साहित्य शिल्पी प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2003
- इन्द्रनाथ मदान, हिन्दी उपन्यास पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2001
- नरेन्द्र मोहन, आधुनिक हिन्दी उपन्यास, प्रथम संस्करण, 2000
- विद्या शंकर राय, आधुनिक हिन्दी उपन्यास और अजबबीपन, संरर .ती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2000

* डॉ० विवेकी राय. हिन्दी कहानी समीक्षा और सन्दर्भ, राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद. प्रथम संस्करण. 2001
* डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा, हिन्दी कहानी का विवेचनात्मक अध्ययन, भाष्कर प्रेस, दिल्ली, प्रथम संस्मरण, 2001
* डॉ० बेचन, समकालीन साहित्य और समीक्षा, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001
* डॉ० सुरेश सदावर्ते, कथाकार- गिरिराज किशोर, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2001
* गिरिराज किशोर, उपन्यास शिल्पी, वाणी प्रकाशन, 2000
* गिरिराज किशोर, एक जनभाषा की त्रासदी, राधा कृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1999
* डॉ० रामदरश मिश्र, डा० महीप सिंह, समकालीन साहित्य चिंतन, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2004
* सत्य प्रकाश मिश्र, प्रेमचन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध, इलाहावाद प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2003
* डॉ० बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, 2021
* हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, राज कमल प्रकाशन, 2021
* बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधा कृष्ण प्रकाशन, 2021
* डॉ० पुष्पा सिंह, समकालीन, हिन्दी कहानी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण 1679
* उपेन्द्र नाथ अश्क, हिन्दी कहानी एक अंतरंग परिचय, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1995

- डॉ० धनंजय, समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1998
- डॉ० रमेश चन्द्र शर्मा, हिन्दी कहानी का सकर, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, प्रथम संस्करण, 1998
- मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, 8वीं संस्करण 2018
- गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण, 2000
- इंद्रनाथ मदान, प्रकाशन हिन्दी उपन्यास : एक नयी दृष्टि, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992
- भीष्म साहनी, आधुनिक हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, संस्करण, 1996
- डॉ० प्रेम भटनागर, हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिपेक्ष्य, अधनी प्रकाशन, 1999

शोध निर्देशक

3-4-2024

डॉ० आनन्द प्रकाश गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

अनुसंधायिका

स्वप्ना किरण

10.04.2024

स्वपना किरण

एम०ए० हिन्दी (IGNOU)

पैट क्रमांक- 22090524